%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 194

No. 125

Lakshmī Narasiṃha Temple at Śiṃhāc ofhalam<1>

(S. I. I. Vol. VI, No. 845; A. R. No. 286 of 1899;

I. M. P. Vol. III. P. 1679, No. 114 )

Ś 1195 <2>

S

(१।) स्वस्ति श्री [।।] शकवरुष वुलु ११९५ गु नेण्टि व्रि(वृ)श्चिक

त्रयोदशि[यु] गुरुवारमु-

(२।) नांडु श्रीनरसिह्यनाथुनिकि चोण्डनांडु [र]ट्टुविषयमुलोनि

पेदेरिडान सवनप्रधानुलु

(३।) दारुप्रधानि पुरुषोत्तमप्रधान इच्चिन शासनमु तोल्लि मा

तातलु पेद्दसव्वनप्रधानुलु दारुप्रधानुल-

(४।) ंमांक्कुप्रधानुलु सव्विस[इ]लोपैन प्रधानुलु मा विषय-

मुलोनि भटगुमुडामु म[ड्ड]वाडन-

(५।) ड्डमिको[ं]डामु अनटि उरु श्रीराजराजदेवर चेत अमृत-

भुजुलु मल्लमाडलु एनूरु पेटि दिलसि तां

(६।) व्रिस्तमुगा श्रीनरसिह्यनाथुनिकि दिनप्रति नित्य प्रथम अवसर

पप्पुनिवेद्य लु रेंडुनु वेल्लनि[अ]प्पमु येनु

(७।) श्रीगरुडदेव श्रीविमानपरिवार विदारण श्रीनरसिंहनाथु

श्रीवराहनाथुनिकिंगा विवेद्यमुलु मूडुनु

<1. In the seventeenth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 9th November, 1273 A. D. Thursday. The lunar month is Margaśīra when the Lakshmī-pujā is performed on each of the four Thursdays.>

%%p. 195

(८।) पलरु निवेद्यमु तिरुश्रद्ध(र्द्ध)जामु हन[वा]लि[अ]प्पालु

इरुवै{इ}तो प[प्पु]निवेद्यमु वेल्लनिवेद्यमु रें-

(९।) डुनु कपू [र]सहित विडियालु नलुवै ई{इ} अरगि[ं]प्प

दीपानकु नेइ नालुउ कु[च्चि]लु मा पूर्व्वपुरुषुलु ई

(१०।) च्चिन धम्म(र्म्म) प्रतिपाल्लिच्चिति ई उर(रु) नु पूव्व(र्व्व)दत्त

चिय्यमामलंचि नित्योत्सवदासुलैन अ जनवु चिंगमनाय-

(११।) कुनिकि खंड्डिकववुक रेंडु पुट्टुलु ई उ[रु]नायकुलकु

अलपुट्टियु ई वासुदेवरकु पद्दुमुवोयुनिकि

(१२।) देवतकुगा पद्धन्दि(न्बिं)लचिन उरु सप्रामारण्यमुगा स्वामिकि

चेल्लगलयादि ई अरगि[]च्चदि प्रस(सा)दमु ई उरु पड़शि-

(१३।) न चिगुनायकुनिकि प्रसाद कु[ं]च्चलु रेंडुनु अप्पालुरे[ ]डु

विढियालु रेंडु पालु पेरवु तूमडु तिरुवाराधनच्यरु-

(१४।) लकु प्रसाद कु[]च्चयु विडियमुनु श्रीकाय्य(र्य्य)अपु श्रीवैष्णम(व)

तिरुवेंगडदासि पलपरेड्डि गुमुडिसतमरेडि गो-

(१५।) पालदासिकिगानु प्रसाद तल्ययु विडियालु नालु काक्यमल्लसरे

चिग्गास[रि] मन्ममाक्क सरि नारपासरिकि

(१६।) कन्मकि पोतोजु[न]कु प्रसादतल्ययु विडियालु नालु चेल्लगलयाद

सेनातिदेवर गरुड़देवर परिवारदेवर

(१७।) श्रीवराहनरसि[ं]हन(ना)थु अरगि[ं]च्चिडि ई रे[]ड्डु अवसराल

प्रसादमु पडि शेल ई अजनवुदासुलवार(रि) कानग्गलारु

(१८।) ई धर्म्मउ(वु) श्रीवैष्णव रक्ष श्री श्री श्री [।।]